हमारी ज्ञान परंपरा में चिंतन की निरंतरता है : मृदुल

नई दिल्ली। साहित्य अकादमी की ओर से सोमवार को आयोजित प्रवासी मंच कार्यक्रम में आस्ट्रेलिया से आईं विदुषी मृदुल कीर्ति ने आर्ष ग्रंथों की काव्य धारा विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने वेद, उपनिषद, भगवद् गीता आदि के उदाहरण देते हुए बताया कि हमारी सारी ज्ञान परंपरा में चिंतन की एक निरंतरता है। वह इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल थीं और कार्यक्रम उनके व्याख्यान पर केंद्रित था।

साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित किया गया प्रवासी मंच कार्यक्रम

उन्होंने आर्ष ग्रंथों की उपयोगिता और उनके अनुवाद संबंधी अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया। अपनी बात दर्शन के अर्थ से शुरू की जिसका सामान्य अर्थ तो देखना होता है, लेकिन देखे हुए के पीछे को देखना उसका तात्त्विक अर्थ होता है। यानी बीज में वृक्ष को देख लेना दृष्टि नहीं दर्शन है। जहां उपनिषद हमें त्याग करते हुए भोग की प्रवृत्ति में लिप्त होने का संदेश देते हैं, वही संदेश भगवद् गीता में पहुंचते-पहुंचते निष्काम काम (कर्मयोग) में बदल जाता है। उन्होंने उपस्थित श्रोताओं के सवालों के जवाब भी दिए। एक प्रश्न जो परिवेश निर्माण को लेकर था, उसके जवाब में उन्होंने कहा कि मन सरहदों में नहीं बसता है। ब्यूरो